



ASHA ARCHIVES

११४

शिव लक्ष्मी देवी मंत्र



ASHA ARCHIVES

११४ शि।दिलक्ष्मी देवार्चना जातिनी दण्डक

११४

[illegible]

[illegible]

ॐ ह्रीं क्लीं कुंज् आत्मनाय नमः ॥ ध्वज आसनसकिहात् ॥ ॐ
ह्रीं गंगलयतथ नमः ॥ जवस ॥ ॐ ह्रीं गुंगुगुनानमः ॥ खवस ॥ ॐ
ह्रीं लोकोदवताये नमः ॥ दधुत ॥ ॐ २ ॥ ह्रीं १७ ॥ ह्रीं ५ ॥ व्याख्यायाम ॥
अस्य श्रीगुरुकालिकामस्तु स्यान्मन्त्रश्चैव वरप्रविष्टुर्दतीच्छुभा
गुरुकालिदेवताये नमः ॥ लाहातहाजलयाव ॥ ह्रीं ६ बीजाय न
मः ॥ नाशो ॥ स्वाहागक्रयनमः ॥ आभ्र ॥ ह्रीं कीलकाय नमः ॥
४ याद ॥ श्रीगुरुकालीप्रसादसिद्धये विनिथा ग ॥ सवा ५ ॥

आस॥ स्वाहा अस्ताय रुद्र॥ करः ॥ धनः ॥ ॐ हूं कनिष्ठायां
नमः॥ सिद्धि कर्ता ली अनामिकायां नमः॥ दां कुं मध्यमायां
नमः॥ कुं तर्जनीयां नमः॥ नमो अंगुष्ठायां नमः॥ स्वा
हा करतलकरयुष्ठायां नमः॥ ॐ हूं हृदयाय नमः॥ सि
द्धि कर्ता ली गिर मस्त्राहा॥ दां कुं गिराथे वीषट्॥ कुं
कवचाय हूं॥ नमो नमो यवेषट्॥ स्वाहा अस्ताय रुद्र॥
गिराहाय नमः॥ ॐ हूं व्यायक मंगुलाय नमः॥ मंगुलस कीर्तन

॥ रुद्र॥ मंत्रसिलावतय॥ रुद्र॥ गिराहिलवतय॥ ॐ हूं हूं सु
र्यमंगुलाय नमः॥ लीखथने॥ ॐ हूं नमः॥ ॐ हूं हूं सामम
ंगुलाय नमः॥ रुद्रं गनयुक्ता॥ आवाहनादि॥ गिराहिलव
धनु मूढां दर्शयत्॥ ॐ हूं कालग्राही विघ्नहृ कालसंकर्ष
णी धीमहि॥ तत्रः कोलीयथा दयात्॥ नमो ग्रीनलखनहा
य॥ यं॥ रं॥ वं॥ ॥ कुटिका धनु आनि मूढां दर्शयत्॥
द्रुवा धन॥ ॐ हूं यदुष्ठी असेनाय नमः॥ आसनसक्ति

पिबुगथाय॥ गूं मूं पूं मूं लूं यं चरत्ताय नमः॥ ॐ अमृतं
मताद्वं अमृतं वषिती अमृतं अमृतं यथासा॥ मत्समं
नताकय्य॥ मूलनग्रां जलि॥ मत्सं गम्यताद्वं यानि
मद्राद्वं यत्॥ ॐ हूं दिव्योद्यनाथयाद्वं कांत्ययामि॥ ॐ हूं
सिद्धोद्यनाथयाद्वं कांत्ययामि॥ ॐ हूं मानवोद्यनाथयाद्वं
कांत्ययामि॥ ॐ हूं सगुनं अमृतं कान्तं नाथयाद्वं कांत्य
यामि॥ थवगिरसगुनं तयना॥ ॐ हूं चतुर्नमः॥ ॐ हूं

कचननमः॥ ॐ हूं अकृतं नमः॥ ॐ हूं सिद्धं नमः॥ ॐ हूं
भाहनीनमः॥ ॐ हूं पूषं नमः॥ आनयुगा॥ थनमातृका
न्यास॥ ॥ ॐ अस्य मातृका न्यासस्य वक्राक्ष विगमयणी चन्द्रः
मातृका सप्तसुतिदवता अवीर्जः लकिः न्यासविनिधा
गः॥ ॥ वक्राक्षयनभा मूर्धनि॥ गमयणी चन्द्रसनभा॥
मुख॥ मातृका देवता येनमः हृदि॥ अवीजाय नभा गुठ॥ अ
ः लकथनभाः यादथा॥ ॥ ॐ अं कं खं गं घं ङं श्रीगुणाय

नमः॥ ॐ वेंचुं जं जं नूं तर्जनी न्या नमः॥ उंटं ० तं रं लं डं
म (ध) मा न्या नमः॥ ॐ तं थं दं धं नं नूं अ न्या मि का न्या नमः॥
ॐ यं रं वं रं मं डं क नि वि का न्या नमः॥ अ यं रं लं वं रं लं वं
सं हं लं कं : अ : क र त ल क र य का न्या नमः॥ ॥ ध न क र
न्या स ॥ ॥ अ क र वं गं यं डं अं हृ द या य न मः॥ ॐ वेंचुं
जं जं नूं ॐ ली गि र स सा हा ॥ उंटं ० तं रं लं डं गि रा थै व ष ट
॥ ॐ तं थं दं धं नं नूं क व चा य हूं ॥ ॐ यं रं वं रं मं डं न प्र प्र या

य वी ष ट ॥ अ यं रं लं वं रं लं वं सं हं लं कं अ : क्रा य रु ट ॥
ध न अं ग न्या स ॥ ॥ ध न अ न ॥ य क्क ण द क र वि नि मि त
द ह य विं स ल क णी धु त हि मां गृ क ला रि त मी ॥ मू द्रा
क स र म ल य स क ण रि ह सां व (गु) रं न म त क र
हि मां स ध र्मां गृ ॥ ॐ ति ध्या न ॥ ॥ ध न अ न मा ट का ॥ वें
ष सं । गुरु ॥ वें रं मं यं रं लं लिं ग स ॥ उंटं ० तं थं दं धं नं यं
रु न रि स ॥ क र वं गं यं डं यं चूं जं जं नूं उंटं ० हृ द य स ॥ अ

धूसी स॥ ॐ नमः॥ काथवास॥ ॐ नमः॥ थथवास॥ ॐ न
 म॥ भाउदवन॥ ॐ नमः॥ भद्रवन॥ कं नमः॥ जववाहाग
 स॥ रवं नमः॥ जवचुल्यास॥ गं नमः॥ जवकासगास॥ द्यं नमः
 ॥ जवयचिडहास॥ डं नमः॥ जवयचिडथास॥ र्वं नमः॥ खव
 वाहालस॥ चुं नमः॥ खवचुल्यास॥ जं नमः॥ खवकासगास
 ॥ जं नमः॥ खवयचिडहास॥ ॐ नमः॥ खवयचिडथास॥
 टं नमः॥ जवकयचुकुलिस॥ ॐ नमः॥ जवय० स॥ ॐ नमः॥

जवगुणिस ॥ टं नमः जवकयिस ॥ लं नमः जवदयिः ॥ थं
स ॥ गं नमः खवकलचुकुयिस ॥ थं नमः खवयः ॥ दं
नमः खवगुणिस ॥ धं नमः खवकयिस ॥ नं नमः खवयवि
ठवा स ॥ यं नमः जववकास ॥ रं नमः खववकास ॥ वं न
मः नरुस ॥ रं नमः घाटस ॥ मं नमः नूगयस ॥ यं नमः
कंथुस ॥ रं नमः जवदयसुनिस ॥ लं नमः मिलखास ॥ वं
नमः खवदयसुनिस ॥ लं नमः नूगयनजवलाहातर्त्त ॥

२०४
यं नमः नूगलनखवलाहातर्त्त ॥ सें नमः नूगयनजव
याः ॥ हं नमः नूगयनखवयाः ॥ लूं नमः नूग
लननरुत्त ॥ हूं नमः नूगयननूत्त ॥ थं नमः माणका
न्यास ॥ ॥ माणकान्यासयागन, सर्वयातकनागर्त्त
गुवदययत्त ॥ तत्त ॥ माणकान्यास ॥ ॥ थनगुयन
मस्काययाय ॥ अखगुमगुलाकारं व्यायतं थनयया
चनं ॥ तत्तदं दगितं थन, तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ यमासा

यथाइका॥ कूर्मास्त्रायथाइका॥ ध्वजतश्चासनतय॥ तता
 यक्षीमयान्यास॥ हलजस्तुयरु॥ करः॥ धर्म॥ ॐ
 ह्रीं अंगुष्ठायां नमः॥ ॐ ह्रीं तर्जनीयां नमः॥ ॐ ह्रीं मध्य
 मायां नमः॥ ॐ ह्रीं अनामिकायां नमः॥ ॐ ह्रीं कनिष्ठा
 यां नमः॥ ॐ ह्रीं कर्णतलयुष्ठायां नमः॥ ॐ ह्रीं हृदया
 य नमः॥ ॐ ह्रीं गिरिसंस्तरा॥ ॐ ह्रीं गिरिवायव्यद॥ ॐ
 ह्रीं कवचाय ह्रीं॥ ॐ ह्रीं अग्रगण्यवोषद॥ ॐ ह्रीं अस्तुय

रु॥ ॐ ह्रीं उर्ध्वकाय नमः॥ ॐ ह्रीं उर्ध्वकाय नमः॥
 ॐ ह्रीं पूर्वकाय नमः॥ ॐ ह्रीं दक्षिणवकाय नमः॥ ॐ
 ह्रीं उत्तरवकाय नमः॥ ॐ ह्रीं पश्चिमवकाय नमः॥
 ॐ ह्रीं तिवकायासः॥ ॐ॥ मालिनीयत्रय॥ ॐ नमः॥ ग्राह्येनमः॥
 ॐ ह्रीं शिववडवाच॥ जयत्वमालिनीदेवी निम्मलमलनालि
 नीस्ताननाकिः॥ युरद्वीवृद्धिर्न जवर्द्धनी॥ जननीस
 र्वरूपाणां ससागमि नवावस्मिता॥ मातावीगावतीदेवी
 ॐ ह्रीं कृत्तिकाय विमल जलदियाय विमल

ॐ॥
 तन्मोक्षदियाय॥

[illegible][illegible]

सिद्धया गेष्ट गी सिद्धमाता विरुः ११ वृद्ध गी तिथाना
लुवी वाग्विष्टा गी वाग्विष्टा गी मातृ काचत्व निष्पु क्रिया
मंगला सिद्धिलक्ष्मी विरुनिः १२ रुरुति गतिः १३ साष्टा रखाय
गार्वातिना गायणी ग कल्लु क लील कल्लरी मयूयाम
हाकु वा था ग प्रिया तं जय नि जया वा डिताय द संभाह
नातं ने वात्सा रखा द वस्तु वात्सं ग पाता गित मनु माग्नि
गर्भानि रिवा गयाना नूर के १४ रुरु के १५ संयुक्त सप्त वि

यंचा नै दिव्य पाता स्वै मनुर्क काल काया लिनी प्रकृति
दि जन्म ति जन्म चतुः १६ यंच वयस्य क जन्मा ह वै १७ स्वनात्रे १८
रुरु १९ रुरु २० रुरु २१ मय मासं प्रिय मनु विद्या वता हासि
रि म्नुर्क काल काया लिनी दिव्य चर्या नूर के न मस्काय
उंकार हाहा स्वध काय वीष द वकाय दू काय रुकाय जानी
रि म्नुर्क मनु रुरु गो प्रिय रिवा मरु हा सु विद्या रु सुग
वली जाय रिः १९ सा २० के २१ युरु के मी रुरु री म्नु ल दी काते

था गिनी वृत्त न लाय के रूद्र की जल से ४ यूक्क सथा गिनी
था गसिद्धि युद्ध दिये यम यत्रा यम लोचने ४ सप्त यूल
सुर्य वंश सप्तस्य दिवान्ति रुक्मिता सक या ताल सखे वंश
सिद्धि रवा हता वरु रुक्मिता य ४ य १० दु लु कं वै क कार्ति
कार्ति कालं सप्त य ४ सदा मानव ४ सा विधो गा गगन
वयवता गयि सप्त रुक्म दिये युग नूना गम माला यि
यह मधो गान् यदा गान् ४ का ४ वृक्क य १० गम द्या म सा दा व

इष्टा विम्वानि सप्त स्य दवी तं दीय मूर्ख निर्मलं पूर्ण चन्द्रा
नू कार्ति सुलदिये मालि क सक्तु लुला युष्ट गलु सुलं य
चवडा दरे वंश नैर्ना गया १० रु जा वद्ध या द मूलं स्रिये
नान सैकी लिना दवि मूर्ख नि था ४ म सा वा धिरि सप्त
यया दान विन्दु यत्त म सा काल काला गित ४ युरु क्त द
१० विन्दु वृक्क चन्द्रा कयू यया य १० मालि माला सप्त यम
किं जज क सत्यि जल सप्त य सप्त वी ना वि के रं व सप्त

जा॥ धूय॥ दिय॥ जय॥ ईं स॥ स्वाहा॥ १०॥ स्वाहा॥ शुद्ध
नंसुष्टु सुटिकमलिमयं यत्नवचुष्टुयुक्तं। सामुतीर्थ
प्रयुक्तं शकलकुलगले, यत्नवचुष्टुयुक्तं, यत्नवचुष्टु
जाह्नवः शकलमुनिगले ह्यवितः सर्वराः। त्रैलोक्ययुक्त
नीयं सकलरूपसुप्तं कुरुमूर्तिनमामि॥ अत्रगन्धदि
वाक्कसद्वर्णिकलसयुक्ताभावनी॥ १०॥ ततः॥ कुरुय
जा॥ नृंश आभागा शक्यादिः॥ नृंश सिंहासनायनम॥

ध्वनि॥ लाजागसनिरुद्ध वीयमगगसमयुक्तं, अष्ट
दशरुजायुक्ता, यत्नवचुष्टुयुक्तं, यत्नवचुष्टुयुक्तं
वि, त्रिभुवनवचुष्टुयुक्तं, यत्नवचुष्टुयुक्तं, यत्नवचुष्टुयुक्तं
नृंशतथा। गदायमचर्यायाः। दक्षिणनविगतिः। रुद्र
काकुलद्वयवः मृगुखद्वीगकुरुयाः नीलायलारुय
विद्वः वामहस्तविध्विनी, दिव्यतलकृतायाः रुमार
जलरुषिता॥ अत्रयमासनासीना, वद्वयमासनसिता

तत्ता अख वि वृत्ता ॥ भा ह निरु य ॥ नै १ व द्या स न य वा इ का ॥
 नै २ कूँ स र्व ज न क र नी या इ का ॥ नै ३ कूँ स र्व ज न भा ह नी
 या इ का ॥ नै ४ कूँ स र्व ज न रू र नी या इ का ॥ नै ५ कूँ स
 र्व ज न आ क र्ष णी या इ का ॥ नै ६ कूँ स र्व ज न कृ द्रा उ
 वि ण्ण या इ का ॥ नै ७ सै ८ णी आ व धी क र्ण रु द्रा त्रि का य वा
 इ का यू ज या मि ॥ ७ वं ॥ व लिं ग कृ ग कृ ग र ॥ ४ य ॥ दि
 य ॥ ज्ञा य ॥ १० ति आ व धी यू ज ॥ ११ २ त्ता य वि म द वा र्च न ॥

य मा त्मा थ या इ का ॥ १ न ग्रा त्मा थ या इ का ॥ १ कूँ आ न न्द स कि
 र्ण र वा न न्द वी रा धी क थ स ॥ १ न वा त्मा गु ॥ १ म गु ल र
 दारी का य या इ का ॥ १ मूँ ॥ १ आ न न्द स कि ॥ १ र वा न न्द
 श्री म त्ता वि द्या रा ज ण ॥ १ मूँ ॥ १ न वा त्मा गु र्म
 लु र रु द्रा त्रि का य स या द ॥ १ वा य वा ॥ १ इ का ॥ १ ह द या म वा
 इ का ॥ १ ध र्म व लि ॥ १ अ व द्वा य ला या ॥ १ इ का ॥ १ क मा ह ण गी
 या इ का ॥ १ च को मा लि या इ का ॥ १ ट वे वृ वी या इ का ॥ १ र वा रा

. सवर्गुयस्य सा हि तं न कवकु त्रिभक्तु रूपा दशा
 आविहीः॥ उ मरुयगु वानं स्वकु मरु ७ वडा कं॥ स
 स्वकु वेल वाय कः वरदा वरद कि ॥ वा भि वि द्वा गणी
 धूलि कः अनुरु ल क पा सदः॥ द्यम्भ कया ल वी न कः अरु
 यारु य ना सनं॥ यद ल व वि त जा न् वा भ मरु स्मा च द व ती
 ॥ कवका त्रि न ग च अरु ना वर व लु ता॥ द्वि तु जा वर द द
 द्द सिंह स्मारु य क वा स॥ लाना रु र त सा रा द्या ७ ल क ७

कल कल कल न॥ श्रेयवानन्द कथा यं उ क्ता ज कृ प्यु की र्तिता
 ॥ नर्व आत्मा म हा द वं द्वि यु सि द्ध कि मा न वा॥ ७७ ति आ न॥
 ॥ ग ग म्मा आ नन्द स कि श्रेयवानन्द वी रा वि य त थ म्मा ७
 मूल म्मा स्मा न रु द्या गी का थ या इ कां॥ न ग म्मा म्मा आ
 नन्द स कि श्रेयवानन्द ग्री म हा वि द्या ग म्मा ७
 ग्री म्मा मूल स्मा न रु द्या गी का थ या इ कां॥ ७७ द्वा द
 या य या इ कां॥ ७७ या दि स उ र्ग न स वृ क्क॥ मूल न व लि॥

आवाहं मूडा ॥ १३३ ॥ तत्ता सुन्दरी वूजा ॥ मूत्र न प्रिय ॥ ३ ॥
यत्रि वा ग वूजा ॥ नें डीं ॥ १ ॥ कुल गं न यति न थ वल्लरा
माया इकां ॥ आ ॥ नें डीं ॥ वा व पुक ना थ वल्लरा माया
इकां ॥ नें डीं ॥ कौं कं ॥ याल ना थ वल्लरा माया इकां ॥ नें
डीं ॥ या था गि र्था या इकां ॥ ०० ति च पुत्र म ॥ ॥ नें डीं
॥ अनि मा द्या दि र्था या इकां ॥ नें डीं ॥ अ अ सि तां गम दि अ
वक्ता य नि यरु ति अ वृ कू ला वृ क र्था या इकां ॥ नें डीं

॥ दा सर्व क्का रि न्या दि मूडा ये या इकां ॥ म ॥ धन गम य
प्रित त यन ॥ नें प्रिय गा दवी विमरु क्का का भव प्रि श्री म
ही ॥ १ ॥ तत्ता किन्न पुचा दया ॥ नें डीं ॥ अ अ सो प्रिय
य सुन्दरी च कृष्णी नि र्था या इकां ॥ १ ॥ नें डीं ॥ नें क्की सो
प्रिय य वृणी च कृष्णी नि र्था या इकां ॥ २ ॥ नें डीं ॥ नें क्की
सो प्रिय य सुन्दरी च कृष्णी नि र्था या इकां ॥ ३ ॥ नें डीं ॥
नें क्की सो ॥ प्रिय वा सि नि च कृष्णी नि र्था या इकां ॥ ४ ॥

नैं कौं हें कौं हों त्रि पद्म ग्राव कुं ग्री नि ला ग्री पाइ कां
॥ ७ ॥ नैं कौं ग्री हों कौं हों ॥ त्रि पद्म ग्राव कुं ग्री नि
ला ग्री पाइ कां ॥ ८ ॥ नैं कौं ग्री कौं हें त्रि पद्म सिद्धाव
कुं ग्री नि ला ग्री पाइ कां ॥ ९ ॥ नैं कौं ग्री कौं हें नैं कौं अग्नि
वकुं काम ग्री लालय ७ ग्री मि त्रि सना थमि ६ कौं
काम ग्री दवी रूपात्म ल कि ग्री पाइ कां ॥ नैं कौं ग्री कौं हें
हैं कैं हें लै कौं ह्यव कुं जाल अरयी १० ग्री वकी सना

थमि क ग्री वकुं ग्री दवी रूपात्म ल कि ग्री पाइ कां ॥ नैं
कौं ग्री हों ६ कौं साम वकुं पूरु ग्री गङ्गा ग्री आदिया स
ना थमि क ग्री रुग माननी दवी ब्रह्मात्म ल कि ग्री पा
इ कां ॥ नैं कौं ग्री हों कौं हें ६ त्रि पद्म ग्राव कुं ग्री नि ला
ग्री पाइ कां ॥ ६ ॥ नैं कौं ग्री नैं कौं हों कौं हों सम हनन
समथ वाम वकुं वकुं उद्यानयी १० यादि ॥ त्रि ५३ ॥
वर्तुग ॥ वलि ॥ २ ॥ नैं कौं ग्री नैं कौं हों ६ कौं हों कौं हों ग्री मा

हा प्रियु म सुन्दरी म हा रु हा जि का ला च कुं गी या इ की ॥
२॥ नें क्रीं श्रीं कुं कुं कुं ॥ प्रियु म हा रु र वी च कुं गी
निखा ला या उ उ उ इ की ॥ ॥ य न म ध ॥ नें व ग ये अ
य ग ये य ग य ग ये ॥ ओ आ न त् स दा नि व य ता स ना य न
म ॥ ॥ य न ग म य नि न व लि ॥ नें प्रि य रा ध वी वि म ह कुं की का
म ग्ग नि धा म ही ॥ सो ॥ त ना कि न प्र धा द या ७ ॥ त ना व लि
प्र दान ॥ नें क्रीं सो वी वं द क ना ध य ७ था इ म व लि ग द्ग २

सा हा ॥ नें क्रीं सो यां स र्व था मि था ७ था इ म व लि ग द्ग २
सा हा ॥ नें क्रीं सो क्रीं क्रीं ७ था ल था ७ था इ म व लि ग द्ग २ सा
हा ॥ नें क्रीं सो ॥ सो ग ल य ति ना थ ७ थ ७ था इ म व लि ग द्ग
२ सा हा ॥ आ वा ॥ म्हा द ग य ॥ ७ ति न व ना यि का य्ज ॥
॥ ७ ॥ त ना सि धि ल क्शी द वा च न ॥ श्वं क नि वृ का य न म ॥ श्वं
अ ना मि का य न म ॥ श्वं म मा य न म ॥ श्वं त र्ज न्या य न
म ॥ श्वं अ गु ष्ठा य न म ॥ श्वं अ क्रा य रु द् ॥ श्वं द द या य न

म॥१॥ शिवं निरुस साहा ॥ शिवं निरुये वाषट् ॥ शिवं कवचाय
हं ॥ शिवं भगवाय नमः ॥ शिवं अस्त्राय रुद्र ॥ ॐ ति सिद्धि ल
क्ष्मीया षडंग न्यासः ॥ ॥ वक्र न्यासः ॥ ॐ शिवं सिद्धि लक्ष्मी
युगा पूर्व वक्राय नमः ॥ ॐ शिवं सुषिकाली दक्षिण वक्रा
य नमः ॥ ॐ शिवं सिद्धि लक्ष्मी काली उरु वक्राय नमः ॥ ॐ शिवं
अनाका काली यन्त्रि मवक्राय नमः ॥ ॐ शिवं सर्वसंसार
काली उरु वक्राय नमः ॥ ॐ शिवं तम साहा अस्त्राय हं

रुद्र ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ति सिद्धि लक्ष्मीया वक्र न्यासः ॥
यद्वा सनाय यादका ॥ यद्वा सनाय यादका ॥ ॐ यद्वा सना
य यादका ॥ ध्यान ॥ यद्वा लुद्धि ति शिव कुन्द धवला रवः ॥ पु
न्युक्तां जगत्त्रिंशत्काले विराजित कलां वक्रालिका ह
न विं ॥ यद्वा ह्याय त्रि वक्र यव कर्मां गूला सि म्द्रां कुर्मां व
ष्टांग नृक याल याल कल गं ह स्ति य सा दा ह्यं ॥ ध्यानं व
धनमः ॥ मूर्धन्य नृन त्रिधा ॥ ३ ॥ षडंग ॥ वलि ॥ गमयति

नवदुर्जन॥ १॥ सिद्धिलक्ष्मीविमलकालिकायै धामसहित
नमः संकषलियथा दयात ॥ १॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ सुदु महावज्र
था। गङ्गागी सुंदरुं ह्रीं सुंदरुं ह्रीं सुंदरुं ह्रीं सिद्धिलक्ष्मी
आये याइ कां ॥ वलि ॥ ॥ तत्ताय त्रिवारयूता ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ
कर्मगलपतिनाथयाइ कां ॥ दया वाम ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ क
र्मगलपतिनाथवल्लरामयाइ कां ॥ दया दक्ष ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ
ॐ कर्मवदकनाथयाइ कां ॥ दया उरु ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ कर्म

वदकनाथवल्लरामयाइ कां ॥ दया पूर्व ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ आदि
यानपीथनाथयाइ कां ॥ दया मध्य ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ वृक्षसंख
तकनाथयाइ कां ॥ दया ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ आडियानपीथनाथ
याइ कां ॥ दया पूर्व ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ महाकनवीरममनना
थयाइ कां ॥ दया दक्ष ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ सर्वसंसारवस्त्रात्कट
कट्टवालअम्बायाइ कां ॥ दया पश्चिम ॥ ॐ क्लीं ह्रीं ॐ सक
ललोककट्टवालकालाअम्बायाइ कां ॥ दया उरु ॥ ॐ

ASHA ARCHIVES



ASHA ARCHIVES

अशा मंडळ ASHA MANDAL	3113	
-------------------------	------	--

ॐ ह्रीं श्रुं ह ह या गि या या इ कां ॥ द्या ॥ ॥ वृति द्या य
जां ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रुं मूडं रु नी या इ कां ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं श्रुं मू
स मू नी या इ कां ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं श्रुं मू मा रु नी या इ कां ॥
॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं श्रुं मू आ क र्ष नी या इ कां ॥ ध्वन वलि ॥
॥ वृति मू न्यादि ॥ ॥ हं सा स्ना य या इ कां ॥ वृषा स्ना य या
इ कां ॥ मयू ना स्ना य या इ कां ॥ गरू ण स्ना य या इ कां ॥ म

ली षा स्ना य या इ कां ॥ गरू ण स्ना य या इ कां ॥ ध्रु वा स्ना य
या इ कां ॥ सिं हा स्ना य या इ कां ॥ ॐ ह्रीं श्रुं अ वृ णाय
ली ष वी अ सि तां ग रे न व स हि तं ४ या इ कां ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं
श्रुं क मा ह ण गी रू र रे न व स हि तं ४ या इ कां ॥ वलि ॥
ॐ ह्रीं श्रुं चं को मा गी च द रे न व स हि तं ४ या इ कां ॥ वलि
॥ ॐ ह्रीं श्रुं ढं वे षू वा का ध रे न व स हि तं ४ या इ कां ॥
॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं श्रुं तं वा गा दि उ म रु रे न व स हि तं ४

याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं यं न न्या य नी कं याली रे न
व स हि त ॥ याइ का॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं यं चाम्भु अ रि ठ
न रे न व स हि त ॥ याइ का॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं न म स ल
झीं हा न रे न व स हि त ॥ याइ कां॥ वलि॥ धनं॥ नृति
व म्मा न्या दि यू जां॥ ॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं नि वा द वी याइ कां
॥ धनं वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं रु ण व ति द वी याइ कां॥ वलि॥
ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं मा या द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं रु

द्रा द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं किं कि नि द वी याइ
कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं वि म ला द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ
क्रीं ह्रीं श्रुं ज म डि द्रा द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं व
रु क र्ष नी द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं द्र ण द गी
द वी याइ कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं वी र म मी द वी याइ
कां॥ वलि॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं किं कि नि द वी याइ कां॥
॥ ॐ क्रीं ह्रीं श्रुं का कि नी द वी याइ कां॥ धनं वलि॥ नृति द्रा

दल य प्र यू जा ॥ उँ कीं श्रीं खुँ जं जं जं जं जं जं किनीया
इकी ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ गं गं गं गं गं गं किनीया इकी ॥
॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ लं लं लं लं लं लं किनीया इकी ॥
॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ कां कां कां कां कां कां किनीया
इकी ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ सां सां सां सां सां सां किनी
या इकी ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ हां हां हां हां हां हां
किनीया इकी ॥ वलि ॥ ॐ ॥ उँ कीं श्रीं खुँ पूं पूं पूं पूं गिनि

यी भय या इकी ॥ द रु द द्या ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ जालं
जयी भय या इकी ॥ द द्या द द्या ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ काम
रूययी भय या इकी ॥ द द्या द द्या ॥ वलि ॥ उँ कीं श्रीं खुँ अति
यानयी भय या इकी ॥ म गु न म द्या ॥ ध न न वलि ॥ ॥ उँ
कीं श्रीं खुँ उँ कीं दूँ लं लं लं लं लं लं न म ४ ॥ गि ५ ३ ॥ व उँ ग ॥
॥ वलि ॥ आ वा द्या ॥ मू द्या ॥ ॥ ग न वलि यु दान ॥ ॥ खुँ
द वी यू उ दि र्ग ल ज दार ग गि न उ द्या ला मूर व सर्व वि

द्वनासयश्चरुदृष्टाहा ॥ श्वं वद कनाथयस्ववस्त्ररा
मासहित ॥ या इ का वलिगु द्रु २ स्वाहा ॥ ने जीं श्रीं श्वं डा
रुद वस्त्रानाथि यथं दृष्टाहा ॥ श्वं गंगलपाथयस्ववस्त्ररा
मासहित ॥ या इ का वलिगु द्रु २ स्वाहा ॥ श्वं सर्वथागिथा सर्वजी
॥ ० ॥ या सर्वकृष्टया लथा वलिगु द्रु २ स्वाहा ॥ ॥ ॥
वाक् ॥ म्हा ॥ ॥ तिसिद्धिलक्ष्मी देवाचन ॥ ॥ ॥

१ ॐ नमो भगवते ॥ यनयुननमस्कार ॥ ॐ हं महाचक्र
था ॥ गण्डविदं कल ॥ श्रीं द्रु अन्ता यरुद ॥ वामकथ ॥ ॐ न
मन्त्रवरुन अन्ता यरुद ॥ कलतायथा ॥ ॐ श्वं जीं श्वं जीं श्वं
ॐ ॥ यीद न्यास कुर्यात् ॥ रुरु कृतयुग म्भुसना यनम
॥ वामवाकतल ॥ रुरु कृतयुग म्भुसना यनम ॥ वामया
दीगुलो ॥ ॥ रुरु द्वायययुग म्भुसना यनम ॥ वामया
दीगुलि ॥ ॥ रुरु कलियुग म्भुसना यनम ॥ वामया

जायति॥ ॐ ॐ स (वृद्ध) म् भु सनाय नमः॥ दक्षया दत्ता
त॥ ॐ ॐ ययुर्वद म् भु सनाय नमः॥ दक्षया दांगुली॥
ॐ ॐ सामवद म् भु सनाय नमः॥ दक्षया दांगुली नश्व
॥ ॐ ॐ अथर्वद म् भु सनाय नमः॥ दक्षया दांगुली॥
ॐ ॐ ऋतु म् भु सनाय नमः॥ वामगुलु ॥ ॐ ॐ वक्रि
म् भु सनाय नमः॥ दक्षगुलु ॥ ॐ ॐ यम म् भु सना
य नमः॥ वामगुलु ॥ ॐ ॐ नैऋत्य म् भु सनाय नमः॥

दक्षया दत्ता ॥ ॐ ॐ वृद्ध म् भु सनाय नमः॥ वामगुलु ॥
ॐ ॐ वायु म् भु सनाय नमः॥ दक्षगुलु ॥ ॐ ॐ धनद
म् भु सनाय नमः॥ वामगुलु ॥ ॐ ॐ ऋतु म् भु सनाय नमः॥
दक्षगुलु ॥ ॐ ॐ अनन्त म् भु सनाय नमः॥
वामगुलु ॥ ॐ ॐ वृद्ध म् भु सनाय नमः॥ दक्षगुलु
॥ ॐ ॐ सुखि म् भु सनाय नमः॥ वामगुलु ॥ ॐ ॐ पु
त्रय म् भु सनाय नमः॥ दक्षगुलु ॥ ॐ ॐ वृद्ध यता ॥

नायनमः॥^मवांकयां॥ॐॐ विष्णुप्रतापनायनमः॥
 कदा॥ॐॐ रुद्रप्रतापनायनमः॥^मवामया॥ॐॐ॥
 ॐॐ लीश्वरप्रतापनायनमः॥^मदक्षतन्त्र॥ॐॐ सदा
 निवप्रतापनायनमः॥^मवामस्तन॥ॐॐ हेनवप्रता
 पनायनमः॥^मकंद॥ॐॐ ॐॐ ॐॐ महालिवा
 नायनमः॥^मआधर॥ॐॐ महाॐॐ नवा सनायनमः॥
 नाहो॥ ॥ ॐ अस्य गुह्यकालीकामनुस्य ग्रीविप्रयु

अविग्रहं यच्चुक्तं न कवकादिना तव कान्तं गुह्यकाली
 लीश्वरताम्रं वाजं सौमिणीं किं ॥^मकीलकीं मन्त्राय
 चतुष्टयं साधुं नयुर्वं कलाचलुयाग
 स्वामी प्रोक्तं यथा यदीना यागः॥ ॐॐ ॥ नमः॥
 अस्तु यरुद्र ॥ ॐॐ कतिष्ठायां नमः॥ सिद्धि काली
 अनामिकायां नमः॥^मक्रीं क्रीं मधुमायां नमः॥^मक्रीं
 ॐॐ नीलायां नमः॥ नमः॥ अंगुष्ठायां नमः॥ नमः॥

[illegible][illegible]

न्यासः॥ १॥ ॐ ॐ ॐ ॥ वृक्षं (धृ) ॥ ॐ ॐ ॐ निरवास्तु
ग्रायादः॥ ॐ ॐ ॐ हृदयाय नमः॥ ॐ सि ॐ नाशो॥ ॐ
धि ॐ दक्षिणाय ग्रायादः॥ ॐ क ॐ वामनाय ग्राया
दः॥ ॐ ग ॐ वामनासाय ग्रायादः॥ ॐ ली ॐ दक्षि
णनासाय ॥ ॐ क्री ॐ वामक (लु) ग्रायादः॥ ॐ क्री ॐ द
क्षिणक (लु) ग्रायादः॥ ॐ ह्रं ॐ लि (ग) ग्रायादः॥ ॐ मू ॐ
गु ॐ ग्रायादः॥ ॐ ॐ ॐ क्र म ध ग्रायादः॥ ॐ न ॐ वृक्षं

(धृ) ग्रायादः॥ ॐ म ॐ ललाटादि हृदयार्कः॥ ॐ स्त्रा ॐ म
स्तकादि ग्रायादार्कः॥ ॐ ली ॐ वादादि मस्तकां ग्राया
दः॥ नृ नंद हन्यासः॥ ॥ तत्ता प्रकृती न्यासः॥ ॐ नाशो वा
दः॥ क्री हृदयाय वादः॥ ॐ विन्धो वादः॥ ॥ ॐ हृदयाय
दः॥ ॐ नाशो वादः॥ सिं था नो वादः॥ धिं कं द वादः॥
ॐ मूला अथ वादः॥ ॐ वृक्षं (धृ) वादः॥ ॐ क्र म ध
वादः॥ कं वामग (लु) वादः॥ ग्राद हृग (गु) ॥ लि ना सा

(ग) ॥ शंभु उद्धृष्टि ॥ शंभु अ (अ) द न ॥ शंभु जि द्वा (य) ॥ शंभु
 अ ध न ॥ उं ह नो ॥ शंभु स्वा क (लु) ॥ हा ह द या य नि ॥ य
 न रु द न्या स ॥ ॥ आ स न यू ज्ञा या य ॥ उं शंभु च तु र ग म् लु
 स ना य न म ॥ उं शंभु च तु र्ब द म् लु स ना य न म ॥ उं शंभु दि
 ग्य ति म् लु स ना य न म ॥ उं शंभु य च्छ य ता स ना य न म ॥
 उं शंभु रे त वा स ना य न म ॥ उं शंभु लि वा स ना य न म ॥
 त ता आ स न यू ज्ञा ॥ ॥ ध्यान ॥ अ ति गु ऋ म हा का

ली, द न व क्रा ति ला च ना. कृष्ण व लु म हा नं जा, अ वू
 वा ह सु नू द यी ॥ नाना व लु म् र वी दे वी, सूर्य रा वा नि
 का स्म र त। वा द्यु च र्म य री ध ना, हा ज रु न ह रु वि ता
 विष्णु लो क ग व ज व, मू ऋ या य ध द क्षि ण। र व द्वा णि वा
 ण या उ व, मृ त वा ल क रं त था ॥ वि च न की क म ग र्ज
 सह स्र ग वि स त्रि र्ण। अ व्वा नि क स्य म ध्य र्थ च क सि
 धि यु व लि नी ॥ चि का ला कु ल म ध्य स्ता आ ति रू पा च

ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं महाचक्र द्वात्रयालं श्रीं याद ॥ पूर्वखव ॥ ॐ ह्रीं
क्रीं श्रीं च लुं श्रुं द्वात्रयालं श्रीं याद ॥ पूर्वजव ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
मं लुं ला य त्रि यू जा अत्रय ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं महाचक्र लुं या ग श्रु त्रि
॥ रु सा ॥ यंच काली प्रवयु त्रि तन सा की य श म नु त यंच
काली य अ त र्थ ली ॥ त्रि यां ड लि नां स यू क य त्रि वा त यू जा
मा त र ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं ह्रीं १० ॥ लि ता लुं व या द ॥ अं ग म दा न
यं ग म ग म न यू जा वा मा व रु न ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क र त्री त र

ग म ना य न म ॥ पूर्व ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ज या व रु न ॥ ग म ना य
न म ॥ द कि ले ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं काल द लुं ग म ना य न म ॥
आ ग ले ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं धू मा कु ल ग म ना य न म ॥ ले
अ त ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अ सि य त्र ग म ना य न म ॥ वा यो
व ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं रु ता वा ग म ना य न म ॥ वी ग म न ॥
अ न ॥ इ लि ता गे द ग्य स व र्ण ग म ना लू क रे त र ॥ वं ता ल
का क र्थ र्थ लिंग वा यू ग म ना न क ॥ त त ॥ पूर्व दा त र ॥ १०

ला०॥ ॥ ^{अ२}ॐ ह्रीं अं ह्रीं म हाम नु द विनी कालि अम्बा
या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं म हाम नु धू मा कालि अम्बा
या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं शालिनी कालि अम्बा या द
हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं ग विनी कालि अम्बा या द हूं
हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं ग ग (गवती) कालि अम्बा या द हूं
हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं मा या कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥
ॐ ह्रीं अं ह्रीं म हामा या कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ

ह्रीं अं ह्रीं मा या कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं
ह्रीं नि त्या कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं
ना कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं म हाम नु
वि या कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं म हाम
नु का म न दि नी कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ ह्रीं अं ह्रीं
ह्रीं म हामा म नु उ मा न दि नी कालि अम्बा या द हूं हूं नमः॥ ॐ
ह्रीं अं ह्रीं म हाम नु वि य न दि नी कालि अम्बा या द हूं

ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु सरग नदिनी कालि अ
म्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं यग नदिनी कालि अम्बा
याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु महा लक्ष्मी कालि
अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु रजत मयी
विकालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु स
र्वग कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु वि
द्या कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु मी

नजा कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु
अमृता कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महाम
नु चन्द्रिनी कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं म
हामनु अस्त्री कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥ ॐ ह्रीं क्लीं अं
हूं श्रीं महामनु सिद्धि धा नि कालि अम्बा याद हूं ॐ नमः॥
ॐ ह्रीं क्लीं अं हूं श्रीं महामनु विद्या धरी कालि अम्बा याद हूं
ॐ नमः॥ ॥ ततः मूत्रा काश आग्नेया दानयः॥ ॐ ह्रीं क्लीं

महासुखमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महालालमूर्ति
कालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महासूर्यमूर्तिकालिअम्बाया
द॥ॐ श्रीं महासाममूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महा
हाननमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महायुरामूर्तिका
लिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महानशामूर्तिकालिअम्बायाद॥
ॐ श्रीं महाक्रीनमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महाअ
र्षिमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महाकटुमूर्तिकालि

अम्बायाद॥ॐ श्रीं महाकुलिसयहननमूर्तिकालिअम्बा
याद॥ॐ श्रीं महामण्डलमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं
महागायकीमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महारासवी
मूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महाअक्षमूर्तिकालिअम्बा
याद॥ॐ श्रीं महासरसमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं
महागावमूर्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महारौषणमू
र्तिकालिअम्बायाद॥ॐ श्रीं महाहानमूर्तिकालिअम्बा

याद ॥ डौं ग्रां दूं महाकातिमूर्तिकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं म
हागर्वमूर्तिकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महावीरमूर्तिका
लिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महाकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं म
हाकालिनगरमूर्तिकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महाहानमू
र्तिकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महाधारा मूर्तिकालिअम्बाया
द ॥ डौं ग्रां दूं महाप्रासकी मूर्तिकालिअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं
महागङ्गसी मूर्तिकालिअम्बायाद ॥ ॥ प्रतादक्षिणाय

विमयको ॥ डौं ग्रां दूं महावामवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं
ग्रां दूं महाविवरीवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महादि
वरीवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महागमवरीवामभङ्गरी
अम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महारुचरीवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं
ग्रां दूं महानसवरीवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महार्द
समतिवामभङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महाविमलमतीवा
भङ्गरीअम्बायाद ॥ डौं ग्रां दूं महाविष्णुमतीवामभङ्गरीअम्बा

याद ॥ डीं डूं महा सिंह मती वाम श्वरी अम्मा याद ॥ डीं डूं
महा खलु मती वाम श्वरी अम्मा याद ॥ डीं डूं महा वीच
क मती वाम श्वरी अम्मा याद ॥ डीं डूं महा अरु मती वाम
श्वरी अम्मा याद ॥ डीं डूं महा अहीराम मती अम्मा याद ॥
डीं डूं महा रेश्व सिंह मती वाम श्वरी अम्मा याद ॥ उरु
॥ डीं डूं डूं डूं कलनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं दवासा
नाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं वामनाथ याद ॥ डीं डूं

डूं डूं डूं वल्लभनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं अथ वनाथ या
याद ॥ डीं डूं डूं डूं दल कथनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं मी
ननाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं दयशिव नाथ याद ॥ डीं डूं
डूं डूं डूं गरुडनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं रदा (गुरु श्वरी
नाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं गगलनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं
डूं मरुतनाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं वामनाथ याद ॥ डीं डूं
डूं डूं डूं जगन्नाथ याद ॥ डीं डूं डूं डूं श्वललनाथ या

याद ॥ उं ड्रीं हूं चूं हूं सिद्धि नाथ गायदा ॥ १० मंत्रु या काल
पूर्व संयुक्त ॥ ॥ तत्ता धातु गद लघातु ग कालि यूजा ॥ ॥
उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान सूर्य मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं
नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं
हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान साम मूर्ति कालि २ अम्बा
याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान साम मूर्ति कालि
२ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान आनन्द म

र्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान पु
साः मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम हास्तान
न नर मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम
हास्तान श्री मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम
हास्तान उ माघि मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम
हास्तान यरा मूर्ति कालि २ अम्बा याद हूं हूं नमः ॥ उं ड्रीं हूं सः ॥ गम
हास्तान स्वन क सय ह गन मूर्ति कालि २ अ

महापादकूं नमः॥ उं क्री हं सं ॥ महाज्ञानयात्रुल मूर्लिका
लि २ अमहापादकूं नमः॥ उं क्री हं सं ॥ महाज्ञानतायकी मू
लिकालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं क्री हं सं ॥ महाज्ञाननगा
स्यां मूर्लिकालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं क्री हं सं ॥ महा
ज्ञानजक मूर्लिकालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं क्री हं सं ॥ महा
ज्ञानसुखकालि २ सरुग्र सुखकालि २ मूर्लि अमहापादकूं
नमः॥ ॐ तिषादणदल ॥ ॥ गंगादादणदल ॥ उं कूं क्री

धीरुद्र महाभलायकालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं
रुद्र महासावर्गी कालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं रुद्र
महाउल्का मुरवी कालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं रुद्र
महापुत्रु मुरवी कालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं रुद्र
महारा ममूर्लिकालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं
रुद्र महाराज स मुरवी कालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं क्रीं
धीरुद्र महात्रेलाक मुरवी कालि २ अमहापादकूं नमः॥ उं कूं

कौण्डरुद्रमहाअर्नगमुखीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥
ॐहूँकौण्डरुद्रमहाभाहनमुखीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥
ॐहूँकौण्डरुद्रमहाविद्याधरमुखीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥
ॐहूँकौण्डरुद्रमहामनतीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥ॐहूँ
कौण्डरुद्रमहाभलायनमनात्मनकालि२अम्बायादहूँकुंन
मः॥कृतिदादणदलः॥ ॥तथाअष्टदलः॥ ॐहूँकुं
असितांगरेशवासनाथअष्टाष्टकथागिनीसहिताथवृक्षव

गीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥ॐहूँकुंकुंरुद्ररेशवासना
थअष्टाष्टकथागिनीसहिताथवृक्षवतीकात्रि२अम्बायादहूँकुं
नमः॥ॐहूँकुंकुंरुद्ररेशवासनाथअष्टाष्टकथागिनी
सहिताथकुमारवतीकालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥ॐहूँकुं
कुंरुद्रकाधरेशवासनाथअष्टाष्टकथागिनीसहिताथविष्णुवती
कालि२अम्बायादहूँकुंनमः॥ॐहूँकुंकुंरुद्रउत्तमरेशवासनाथ
अष्टाष्टकथागिनीसहिताथवृक्षवतीकालि२अम्बायादहूँकुंन

म॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं मङ्गला कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम॥ उँ द्रीं
द्रूं चुं रुं दक्षिणी कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं
गङ्गाली कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं मूलिनी
कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं वज्रिनी कालि२ अम्बा
याद द्रूं रुं नम॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं यालिनी कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम
॥ उँ द्रीं द्रूं चुं रुं अङ्गुलिनी कालि२ अम्बा याद द्रूं रुं नम॥ ॐ
ति अक्षय ॥ ॥ गतानवयागिन्या ॥ उँ रुं रुं द्रीं श्वेत कालि२ अम्बा

[illegible]

दिवा विनीलको वषट् ॥ शुँ शुँ दूँ कवचाय स्वतन्त्रता लको दूँ ॥ शुँ
 शूँ दूँ नमो या यनित्या लको वषट् ॥ शुँ शुँ दूँ ॥ अन्नाय अ
 नन लको रुद्र ॥ ४ ॥ नमिषत्तं नन पूजा ॥ तता आ स्र पूजा ॥ ॐ ॥ च
 तुर्यं मन्त्राय नमः ॥ ॐ ॥ चतुर्वद मन्त्राय नमः ॥ ॐ ॥ लकादिदि
 ग्धति मन्त्राय नमः ॥ ॐ ॥ सुखि सहाय मन्त्राय नमः ॥ ॐ ॥ वृक्ष वि
 भूत उग्र गदा गिवाय यथ रूपात्मक काला सनाय नमः ॥ ॐ दूँ
 रैरवा सनाय नमः ॥ ॐ शुँ दूँ गिवा सनाथ नमः ॥ ७ ॥ तता

[illegible]

गयनमः॥ॐ॥ ह्रीं त्रिदशायनमः॥ॐ॥ वीषद्वयवायेनमः॥ॐ॥ ग्रीं
अष्टात्रायनमः॥ॐ॥ क्रीं कृत्तिहायनमः॥ॐ॥ यौवम्नायनमः॥
ॐ॥ ग्रीं मृगलायनमः॥ॐ॥ श्रुं उमयुकायेनमः॥ तथा दक्षिण
॥॥ॐ॥ ग्रीं विद्वन्नायनमः॥ॐ॥ रुं कलिकायेनमः॥ॐ॥ क्रीं त
र्जुनयेनमः॥ॐ॥ क्रीं अर्कलयेनमः॥ॐ॥ उं दलुयेनमः॥ॐ॥ वृं
कललयेनमः॥ॐ॥ लो॥ ग्रीं गूलायनमः॥ॐ॥ दूं वाल्मयेनमः॥
ॐ॥ क्रीं यमायनमः॥ॐ॥ ग्रीं यस्तुकायेनमः॥ॐ॥ अं कूटायनमः॥

ॐ॥ ग्रीं यात्रिजातायनमः॥ॐ॥ रुं कृत्तिकायेनमः॥ॐ॥ धीं गामगाय
नमः॥ॐ॥ ग्रीं यष्टामालायनमः॥ॐ॥ वृं ति ति मायनमः॥ॐ॥ य्रीं
गुह्यायनमः॥ॐ॥ ग्रीं स्वस्तिकायनमः॥ॐ॥ क्रीं वदनेनमः॥ॐ॥
क्रीं वृकमलुयेनमः॥ॐ॥ वषद्वयवायेनमः॥ॐ॥ ग्रीं यात्रुमूये
नमः॥ॐ॥ क्रीं नद्यावर्लायनमः॥ॐ॥ क्रीं कुललायेनमः॥ॐ॥ मा सरव
लुयेनमः॥ॐ॥ सूमलुयनमः॥ॐ॥ अं लायनमः॥ॐ॥ धीं गूलेन
मः॥ ॐ॥ तिवरुयं वासगर्भं संपूज्य ॥ १५ ॥ तथा वक्रपूजा ॥